मैथिली (अनिवार्य भाषा)

Part - II

(Sc., Arts, Com.)

Page No.:
Date: 20/07/2020

Lecture No:- 7

Unit - 4

डॉ॰ अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो॰-9040201409

चिन्तन-प्रवाह — डॉ॰ धीरेन्द्र नाथ मिश्र

'शक्ति-पूजा'

डॉ॰ धीरेन्द्र नाथ मिश्रक पहिल कविता संग्रह थिक चिन्तन-प्रवाह। एहि कविता संग्रहक एक उत्कृष्ट कविता अछि 'शक्ति-पूजा'। मिथिलामे आदिकाल सँ शक्ति पूजा पूर्ण श्रद्धा आ विश्वासक संग कएल जाइत अछि। आश्विन मास मे मिथिलाक सभ जन भक्ति-भाव मे डूबल रहैत छथि। गरीब-धनिक सभ केओ दिन-राति पूजा-अर्चनामे लागल रहैत छथि। शक्ति पूजा शाक्त लोकनि द्वारा कएल जाइत अछि। ई अन्याय पर न्यायक जीतक प्रतीक रूप मे कएल जाइत अछि। दुर्गा वा शक्तिक पूजा दस दिन धरि चलैत रहैत अछि। भिन्न-भिन्न दिन मे भिन्न-भिन्न देवीक रूपक पूजा कएल जाइत अछि।

Scanned with CamScanner

जन-जन आसिन मास क आगमन
सँ नव उमंग उत्साह सँ शक्ति पूजा के
लागि जाइत छथि। त दुर्गाक आराधना
आगमन के प्रस्थान धरि पूर्ण उत्साहक
संग कयल जाइत अछि। एहि पूजा मे
दूरा-विदूरा मे रहनिहार मैथिल जन
अपन-अपन गाम आबि छथि पूजा मे
सम्मिलित होयबाक हेतु।

"मत्य प्रवास, विहुँस पूजन।
भक्त केर आइ मिथिला जागल।।
भाव-विह्वल भए प्रवासी।।
अपन संग उद्गार आनल।।
मत्य प्रवास क निवेदन।

कयल जाइत अछि आ विधि-विधान सँ
दुर्गक पूजा कयल जाइछ। सब जन के
एहि दसो दिन मिथिला भावना जागि जाइत
अछि। प्रवासी लोकनि भाव-विह्वल भए
पूजा मे सम्मिलित होइत छथि। आनन्द
उमंग सँ सबहक मोन प्रफुल्लित रहैछ।
कुपा महंगी सबके बढ़ि गेलक अछि
जे ओ उत्साह मे कमी आनि दैछ।
तथापि धार्मिक धार्मिक भावना छैक।
आजुकाल्हि-काल्हिक रहलो सन्ता पूजा मे
उत्साह पूर्वक सामिल न रहैत छथि।
कोना ओकर मनाइत ओ बुझैत
छथि। दुर्गा हाथ मे एकर निराकरण
नइ नहि छनि तथापि ओ आदर
लिखैत छथि —

Page No.:
Date: / /

"कामना अछि! इसर ऐहन
सद्बुद्धि दुर्गा सप्तमीक परसाधि।
एहन बेर अवतरित भए पुनि
जाय जड़ता जाड़ के भेराबाथि।।"

हे माता भवानी, महिष-मर्दिनी हारिणी माँ दुर्गा, एहन बेर पुनि एहि धरा पर अवतरित भए जगत सँ जड़ता, मूढ़ता आदिक जड़िसँ समाप्त करू। हे जननी मही माँ, अहाँ सँ ई कामना अछि जगतक सभक सद्बुद्धि प्रदान करिऔक।

संसारक माया-मोह के यदि समस्त भार के दुर्बुद्धि आदि लोभ ईर्ष्या के जनक प्रकारक अत्याचार आदि सँ सम्पूर्ण जगत के यदि मुक्त करा दे हे माता एहन बेर पुनि अवतरित भए, सभ दुर्जनक संहार करिऔक आ सज्जन वर्ग पर अपन आशीष प्रदान करिऔक। हे जगत जननी माँ अहाँक जय हो।

—x—

डॉ॰ अरविन्द झा